MODEL PAPER – 3

- परीक्षार्थियों के लिये निर्देश MODEL PAPER–1 के समान होगा।

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिये गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गए सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. "मैं असहाय विवश बैठी ही रही उठ गया छौना मेरा।" – यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है ?
   (A) पुत्र-वियोग (B) जन-जन का चेहरा एक
   (C) तुमुल कोलाहल कलह में (D) प्यारे नन्हें बेटे को
2. जयप्रकाश नारायण को समाज सेवा के लिए किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ?
   (A) गाँधी सम्मान से (B) अर्जुन पुरस्कार से
   (C) नोबेल पुरस्कार से (D) मैग्सेसे सम्मान से
3. जयप्रकाश नारायण का जन्म-स्थान कहाँ है ?
   (A) सिताब दियारा, सारण बिहार (B) मध्य प्रदेश
   (C) लमही, वाराणसी (D) इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
4. रामधारी सिंह दिनकर का जन्म कहाँ हुआ था ?
   (A) लमही, वाराणसी (B) इटारसी
   (C) सिमरिया, बेगूसराय, बिहार (D) राँची, झारखण्ड
5. 'अर्धनारीश्वर' में कल्पित रूप क्या है ?
   (A) राम और सीता (B) राधा और कृष्ण
   (C) शंकर और पार्वती (D) गणेश और लक्ष्मी
6. 'रामधारी सिंह दिनकर को किस रचना पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला था ?
   (A) उर्वशी (B) अर्धनारीश्वर
   (C) कविता की खोज (D) दिनकर की डायरी
7. 'रोज' शीर्षक कहानी में मालती के पति किस व्यवसाय से जुड़े थे ?
   (A) डॉक्टर (B) इंजीनियर (C) वकील (D) ऑफिसर
8. 'रोज' शीर्षक कहानी में महेश्वर कौन फल लाए थे ?
   (A) सेव (B) आम (C) केला (D) चीकू
9. सन् 1926 ई॰ में भगतसिंह ने किस दल का गठन किया था ?
   (A) नौजवान भारत सभा (B) नौजवान दल
   (C) नवयुवक संघ (D) नवयुवक भारत सभा
10. भगत सिंह किसे अपना आदर्श पुरुष मानते थे ?
    (A) करतार सिंह सराभा (B) स्वर्ण सिंह
    (C) गणेश शंकर विद्यार्थी (D) चन्द्रशेखर आजाद
11. 'धाँगड़' किस जगह से आए थे ?
    (A) दक्षिण बिहार (B) उड़ीसा (C) राजस्थान (D) महाराष्ट्र
12. 'बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही' – यह पंक्ति किस पाठ से है ?
    (A) ओ सदानीरा (B) उसने कहा था
    (C) जूठन (D) रोज
13. 'सिपाही की माँ' शीर्षक एकांकी में बिशनी चारपाई के पास मोढ़े पर बैठी क्या करती दिखाई देती है ?
    (A) सूत कातती (B) स्वेटर बुनती (C) चटाई बुनती (D) चावल चुनती
14. 'मुन्नी' कौन थी ?
    (A) सुखनी की बेटी (B) रजनी की बेटी
    (C) शिवनी की बेटी (D) बिशनी की बेटी
15. 'प्रगति और समाज' शीर्षक निबंध किस निबंध-संग्रह से लिया गया है ?
    (A) वाद-विवाद संवाद (C) कहना न होगा
    (C) दूसरी परंपरा की खोज (D) आलोचक के मुख से
16. 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता-संग्रह के रचयिता कौन हैं ?
    (A) भूषण (B) जयशंकर प्रसाद
    (C) रघुवीर सहाय (D) अशोक वाजपेयी
17. हिन्दी साहित्य में गजानन माधव मुक्तिबोध का उदय कैसे कवि के रूप में हुआ ?
    (A) प्रयोगवादी (B) प्रगतिवादी (C) छायावादी (D) प्रपद्यवादी
18. कौन लेखक कांगो के शिक्षामंत्री, वित्तमंत्री एवं प्रधानमंत्री रह चुके हैं ?
    (A) हेनरी लोपेज (B) अंतोन चेखव
    (C) गाइ-डि-मोपासाँ (D) इनमें से कोई नहीं
19. 'जायसी' का जन्म-स्थान कहाँ है ?
    (A) पाटलिपुत्र (B) जायस, कब्र अमेठी
    (C) झाँसी (D) अल्मोड़ा
20. 'नाभादास' किस धारा के संत थे ?
    (A) वैष्णव दर्शन (B) बौद्ध दर्शन (C) शैव दर्शन (D) जैन दर्शन
21. 'नाभादास' का स्थायी निवास कहाँ था ?
    (A) मथुरा (B) वृंदावन (C) शांतिवन (D) बोध गया
22. सुभद्रा कुमारी चौहान रचित 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता कैसी कृति है ?
    (A) शोक-गीत (B) विरह-गीत (C) व्यंग्य (D) हास्य

23. सुभद्रा कुमारी चौहान को 1930 ई॰ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कौन पुरस्कार मिला था ?
(A) सक्सरिया पुरस्कार (B) साहित्य अकादमी
(C) भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (D) पद्म भूषण

24. ज्ञानेन्द्रपति बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित होकर किस पद पर पदस्थापित हुए ?
(A) कारा अधीक्षक (B) अंचलाधिकारी
(C) पुलिस अधीक्षक (D) जिलाधिकारी

25. 'चिर-विषाद विलीन मन की' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है ?
(A) तुमुल कोलाहल कलह में (B) हार-जीत
(C) पुत्र-वियोग (D) अधिनायक

26. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की रचना निम्न में से कौन है ?
(A) रोज (B) उसने कहा था
(C) जूठन (D) तिरिछ

27. 'नाभादास' की कविता का नाम क्या है ?
(A) कवित्त (B) उषा (C) हार-जीत (D) छप्पय

28. जयप्रकाश नारायण का निधन कब हुआ था ?
(A) 08 अक्टूबर 1979 ई॰ (B) 10 अगस्त 1990 ई॰
(C) 25 मई 1985 ई॰ (D) 11 जनवरी 1999 ई॰

29. रघुवीर सहाय का निधन कब हुआ था ?
(A) 10 दिसम्बर 2010 ई॰ (B) 30 दिसम्बर 1990 ई॰
(C) 05 फरवरी 2000 ई॰ (D) 10 दिसम्बर 1995 ई॰

30. 'सुखमय जीवन' के लेखक का नाम क्या है ?
(A) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (B) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(C) मलयज (D) उदयप्रकाश

31. 'पद्मावत' के कवि का नाम क्या है ?
(A) जायसी (B) कबीरदास (C) तुलसीदास (D) सूरदास

32. 'उर्वशी' के रचयिता का नाम क्या है ?
(A) मोहन राकेश (B) रामधारीसिंह दिनकर
(C) मलयज (D) जे॰ कृष्णमूर्ति

33. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के रचयिता का नाम क्या है ?
(A) मुक्तिबोध (B) अज्ञेय (C) दिनकर (D) ज्ञानेन्द्रपति

34. 'दानव दुरात्मा एक, मानव की आत्मा एक।' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है ?
(A) अधिनायक (B) उषा
(C) गाँव का घर (D) जन-जन का चेहरा एक

35. 'पूरब-पश्चिम से आते हैं, नंगे-बूचे नरकंकाल।' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है ?
(A) उषा (B) हार-जीत (C) अधिनायक (D) पुत्र-वियोग

36. 'तेरी कुड़माई हो गई ?' यह पंक्ति किस शीर्षक कहानी से है ?
(A) उसने कहा था (B) जूठन
(C) रोज (D) तिरिछ

37. 'अज्ञेय' रचित पठित पाठ का नाम क्या है ?
(A) रोज (B) शिक्षा (C) तिरिछ (D) ओ सदानीरा

38. ओमप्रकश वाल्मीकि रचित आत्मकथा का नाम क्या है ?
(A) सिपाही की माँ (B) प्रगीत और समाज
(C) जूठन (D) तिरिछ

39. विनोद कुमार शुक्ल रचित कविता का नाम बतावें
(A) प्यारे नन्हें बेटे को (B) छप्पय
(C) उषा (D) अधिनायक

40. ज्ञानेन्द्रपति रचित कविता का नाम क्या है ?
(A) हार-जीत (B) गाँव का घर
(C) उषा (D) पुत्र-वियोग

41. लहना सिंह किस कहानी का पात्र है ?
(A) रोज (B) तिरिछ
(C) उसने कहा था (D) इनमें से कोई नहीं

42. महेश्वर किस कहानी का पात्र है ?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) तिरिछ (D) इनमें से कोई नहीं

43. ब्रजराज कुँवर किस कविता का पात्र है ?
(A) सूर के पद (B) तुलसी के पद (C) छप्पय (D) कड़बक

44. 'छत्रसाल' किस कविता का पात्र है ?
(A) कवित्त (B) कड़बक (C) अधिनायक (D) उषा

45. रामधारी सिंह दिनकर किस काल के कवि है ?
(A) आधुनिक काल (B) भक्ति काल
(C) रीतिकाल (D) आदिकाल

46. 'जायसी' किस काल के कवि हैं ?
(A) आदिकाल (B) भक्तिकाल
(C) रीतिकाल (D) आधुनिक काल

47. 'ओ सदानीरा' शीर्षक पांठ हिंदी साहित्य की कौन विधा है ?
(A) एकांकी (B) यात्रा-वृतांत (C) निबंध (D) कहानी

48. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक पाठ हिन्दी साहित्य की कौन विधा है ?
(A) कहानी (B) नाटक (C) निबंध (D) डायरी

49. 'कड़बक' शीर्षक कविता किस महाकाव्य का अंश है ?
(A) पद्मावत (B) कामायनी (C) मुकुल (D) सूरसागर

50. 'सूरदास के दोनों पद' किस महाकाव्य के अंश हैं ?
(A) कामायनी (B) सूरसागर (C) रामचरितमानस (D) पद्मावत

51. 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता किस प्रतिनिधि काव्य का अंश है ?
(A) मुकुल (B) कामायनी (C) पद्मावत (D) सूरसागर

52. 'तारसप्तक' के संपादक कौन हैं ?
(A) मोहन राकेश (B) बालकृष्ण भट्ट
(C) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (D) अज्ञेय

53. टिटी की माँ का नाम क्या है ?
(A) शीला (B) नीलम (C) मालती (D) संजना

54. हमें जीवन और मृत्यु के विषय में किस रीति से सोचना चाहिए ?
(A) आध्यात्मिक रीति से (B) भौतिकवादी रीति से
(C) अतिवादी रीति से (D) प्रकृतिवादी रीति से

55. 'सर्वव्यापी' शब्द का अर्थ क्या है ?
(A) बिल्कुल (B) सयाना
(C) हर जगह व्याप्त (D) निर्बलता

56. 'आँख लगना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) नींद आना (B) मृत्यु होना (C) प्रेम होना (D) आशंका होना

57. 'ईमान बेचना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) धोखा देना (B) गलत काम करना
(C) याराना तोड़ना (D) अपने कर्त्तव्य से हट जाना

58. 'कमर टूटना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) निराश्रय होना (B) निरूत्साह होना
(C) आर्थिक स्थिति खराब होना (D) अपंग होना

59. 'तीन तेरह होना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) सिद्धांतहीन (B) टालमटोल करना
(C) पराजित करना (D) बिखर जाना

60. दाँत खट्टे करना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) बहुत ठण्ड पड़ना (B) पराजित करना
(C) मुँह का स्वाद बिगड़ना (D) बेइज्जत करना

61. 'उपवन' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) उप (B) ऊप (C) उ (D) अप

62. 'बेईमान' शब्द में उपसर्ग क्या है ?

(A) बे (B) बेइ (C) बेइन (D) बेइमा

63. 'अंकुरित' शब्द में प्रत्यय क्या है ?

(A) अ (B) रित (C) इत (D) त

64. 'बड़प्पन' शब्द में प्रत्यय क्या है ?

(A) अन (B) पन (C) न (D) अप्पन

65. 'ख' का उच्चारण-स्थान क्या है ?

(A) कंठ (B) तालु (C) दंत (D) ओष्ठ

66. 'ण' का उच्चारण-स्थान क्या है ?

(A) मूर्द्धा (B) तालु (C) दंत (D) ओष्ठ

67. 'छ' का उच्चारण-स्थान क्या है ?

(A) तालु (B) दंत (C) ओष्ठ (D) मूर्द्धा

68. 'भ' का उच्चारण-स्थान क्या है ?

(A) तालु (B) दंत (C) मूर्द्धा (D) ओष्ठ

69. 'शहर' शब्द क्या है ?

(A) पुंलिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

70. 'आयु' शब्द क्या है ?

(A) स्त्रीलिंग (B) पुंलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

71. 'आत्मा' शब्द क्या है ?

(A) पुंलिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

72. 'अनुराग' शब्द का विलोम क्या है ?

(A) प्रेम (B) वैराग्य (C) राग (D) विराग

73. 'कृष्ण' शब्द का विलोम क्या है ?

(A) शुक्ल (B) सफेद (C) उजला (D) काला

74. 'स्थावर' शब्द का विलोम क्या है ?

(A) जंगम (B) स्थिर (C) सरल (D) बड़ा

75. 'स्तुति' शब्द का विलोम क्या है ?

(A) द्वेष (B) शिकायत (C) निन्दा (D) दोष

76. 'आकर्षण' शब्द का विलोम क्या है ?

(A) विकर्षण (B) सुदर्शन (C) पराकर्षण (D) घर्षण

77. 'स्वर्ण' शब्द का विशेषण क्या होगा ?

(A) स्वर्णिम (B) स्वर्णाम (C) सुवर्ण (D) स्वर्णकार

78. 'जगत' शब्द का विशेषण क्या होगा ?

(A) जगदीश (B) जागतिक (C) जागना (D) जग

79. 'दिन' शब्द का विशेषण क्या होगा ?

(A) दैनिक (B) दिनकर (C) दिनभर (D) सुदिन

80. 'पुराण' शब्द का विशेषण क्या होगा ?

(A) पुराणीक (B) पुराना (C) पौराणिक (D) धार्मिक

81. 'विशेषण' के कितने भेद होते हैं ?

(A) दो (B) चार (C) छः (D) आठ

82. निम्न में से संख्यावाचक विशेषण कौन है ?

(A) सौ (B) नया (C) अधिक (D) कम

83. 'यथासाध्य' शब्द कौन समास है ?

(A) द्विगु (B) बहुव्रीहि (C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष

84. 'नरसिंह' शब्द कौन समास है ?

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष (C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

85. 'पृथ्वी' शब्द का पर्यायवाची क्या है ?

(A) भूमि (B) भूपति (C) भूधर (D) पाथेय

86. 'गणेश' शब्द का पर्यायवाची क्या है ?

(A) गिरिजाशंकर (B) गिरिजा नंदन (C) गिरीश (D) गिरिजा

87. 'नदी' शब्द का पर्यायवाची कौन नहीं है ?

(A) भागीरथी (B) तटिनी (C) तरंगिनी (D) आपगा

88. 'भौंरा' शब्द का पर्यायवाची क्या है ?

(A) मधुप (B) रसाल (C) सौरभ (D) मकर

89. 'स्वागत' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?

(A) सु + आगत (B) स्व + आगत (C) स्वा + गत (D) स्वाग + त

90. 'गायक' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?

(A) गा + अक (B) गे + अक (C) गै + अक (D) गा + यक

91. 'परमार्थ' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?

(A) पर + मार्थ (B) परमा + अर्थ (C) परम + अर्थ (D) पर + अर्थ

92. 'पावन' शब्द में कौन संधि है ?

(A) अयादि संधि (B) गुण संधि (C) व्यंजन संधि (D) वृद्धि संधि

93. 'भीड़' शब्द कौन संज्ञा है ?

(A) जातिवाचक (B) समूहवाचक (C) भाववाचक (D) द्रव्यवाचक

94. 'संज्ञा' के कितने भेद होते हैं ?

(A) दो (B) चार (C) पाँच (D) आठ

95. 'कुर्सी' शब्द कौन संज्ञा है ?

(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) भाववाचक (D) समूहवाचक

96. 'दूध' शब्द कौन संज्ञा है ?

(A) जातिवाचक (B) द्रव्यवाचक (C) समूहवाचक (D) भाववाचक

97. 'मनुष्यता' शब्द कौन संज्ञा है ?

(A) भाववाचक (B) द्रव्यवाचक (C) समूहवाचक (D) व्यक्तिवाचक

98. 'महोदय' शब्द कौन समास है ?

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय (C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

99. 'भाई-बहन' शब्द कौन समास है ?

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व (C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

100. 'पंचानन' शब्द कौन समास है ?

(A) द्वन्द्व (B) द्विगु (C) तत्पुरुष (D) कर्मधारय

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिये : 1 × 8 = 8

(i) मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस
(ii) मेरा प्रिय खेल
(iii) भ्रष्टाचार
(iv) छठ पर्व
(v) मोबाईल और विद्यार्थी
(vi) दहेज उन्मूलन

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : 2 × 4 = 8

(i) "सच है, जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक
उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।"
(ii) "मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है।"
(iii) आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ।
जो रस नंद-जसोदा बिलसत, नहिं तिहूँ भुवनियाँ।
(iv) कलि कराल दुकाल दारून, सब कुभाँति कुसाजु।
नीच जन मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु।।

3. अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन-पत्र लिखें, जिसमें किसी पर्यटन स्थल पर ले जाने का अनुरोध हो। 1 × 5 = 5

अथवा

सड़क की जर्जर स्थिति के बारे में अपने वार्ड आयुक्त को एक पत्र लिखें।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : 5 × 2 = 10

(i) अगर हम में वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता ?
(ii) 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी का केंद्रीय भाव क्या है ?
(iii) भ्रष्टाचार की जड़ क्या है ?
(iv) प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग क्या है ?

(v) कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती हैं ?
(vi) 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ?
(vii) कवि ने सितारे को भयानक क्यों कहा है ? सितारे का इशारा किस ओर है ?
(viii) नदियों की वेदना का क्या कारण है ?
(ix) हरचरना कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
(x) बिटिया कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : 3 × 5 = 15

(i) 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी का सारांश लिखिए।
(ii) 'जूठन' शीर्षक पाठ का सारांश लिखिए।
(iii) शिक्षा का क्या अर्थ है ? इसके कार्य एवं उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।
(iv) 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता का संक्षेप में भावार्थ लिखिए।
(v) 'कड़बक' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।
(vi) नदियों की वेदना का क्या कारण है ? स्पष्ट करें।

6. निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक का संक्षेपण कीजिए : 1 × 4 = 4

(i) विद्वानों ने चरित्र-निर्माण को जीवन की सफलता की कुंजी कहा है। जीवन में सफल होने के लिए चरित्र-निर्माण एक महत्त्वपूर्ण शर्त है। चरित्र-निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्ति का विकास होता है, जो उसे जीवन-संघर्ष से जूझना तथा सफल होना सिखलाती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन महान चारित्रिक गुणों का एक ऐसा जीता-जागता आईना है, जिसमें कोई भी व्यक्ति अपने आपको देख सकता है तथा सफलता के गुर सीख सकता है। उन्होंने सत्य वचन बोलने, बुरा नहीं सुनने तथा बुरा नहीं बोलने की आवश्यकता पर बल दिया था। आज के छात्रों को इन चारित्रिक गुणों को अपनाना चाहिए, तभी वे जीवन में पूरी तरह सफल हो सकते हैं।

(ii) युवा वर्ग का मस्तिष्क नई-नई बातों की ओर ज्यादा तेज दौड़ता है। उसमें अन्य वर्ग के व्यक्तियों से अधिक आवेश और शक्ति होती है। इस अवस्था में यदि सही दिशा, शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिले तो यही शक्ति और प्रेरणा निर्माण के स्थान पर विनाश की ओर ले जाती है। बिगड़ने और बनने की भी यही आयु होती है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा पद्धति केवल उपाधि बाँटने का काम ही करती है, एक संपूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य बनाना आज की शिक्षा पद्धति के लिए मुश्किल है।

उत्तर

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (A)	2. (D)	3. (A)	4. (C)	5. (C)	6. (A)
7. (A)	8. (B)	9. (A)	10. (A)	11. (A)	12. (B)
13. (A)	14. (D)	15. (A)	16. (D)	17. (A)	18. (A)
19. (B)	20. (A)	21. (B)	22. (A)	23. (A)	24. (A)
25. (A)	26. (B)	27. (D)	28. (A)	29. (B)	30. (A)
31. (A)	32. (B)	33. (A)	34. (D)	35. (C)	36. (A)
37. (A)	38. (C)	39. (A)	40. (B)	41. (C)	42. (B)
43. (A)	44. (A)	45. (A)	46. (B)	47. (C)	48. (D)
49. (A)	50. (B)	51. (A)	52. (D)	53. (C)	54. (B)
55. (C)	56. (A)	57. (D)	58. (C)	59. (D)	60. (B)
61. (A)	62. (A)	63. (C)	64. (B)	65. (A)	66. (A)
67. (A)	68. (D)	69. (A)	70. (A)	71. (B)	72. (D)
73. (A)	74. (A)	75. (C)	76. (A)	77. (A)	78. (B)
79. (A)	80. (C)	81. (B)	82. (A)	83. (C)	84. (A)
85. (A)	86. (B)	87. (A)	88. (A)	89. (A)	90. (C)
91. (C)	92. (A)	93. (B)	94. (C)	95. (A)	96. (B)
97. (A)	98. (B)	99. (B)	100. (B)		

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. (i) मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस

मेरी प्रिय पुस्तक 'रामचरितमानस' है। 'रामचरितमानस' को तुलसीदास के द्वादश प्रामाणिक ग्रंथ रत्नों की माला का सुमेरू कहा जा सकता है। इसके प्रतिपाद्य को स्पष्ट करते हुए स्वयं तुलसीदास ने लिखा है–

"एहि महँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।"

इस महाकाव्य की भाषा साहित्यिक अवधी है जिसे कवि ने अपने युग की राष्ट्रभाषा का-सा प्रशस्त रूप दिया है। यह भारत को राष्ट्रीय गौरव प्रदान करने वाली विश्व-विश्रुत एक अमूल्य कृति है। पूर्ण मानवता और मानव-जीवन की प्रत्येक दशा का उद्घाटन मानस में हुआ है। मनुष्य जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं जो यहाँ न उपस्थित किया गया हो। मानव प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ गोस्वामीजी के हृदय का रागात्मक सामंजस्य हम देखते हैं, उतना अधिक हिन्दी भाषा के और किसी कवि के हृदय का नहीं। यदि कहीं सौंदर्य है तो प्रफुल्लता, शक्ति है तो प्रणति, शील है तो हर्षपुलक, गुण है तो आदर, पाप है तो घृणा, अत्याचार है तो क्रोध, अलौकिकता है तो विस्मय, पाखंड हैं तो कूढ़न, शोक है तो करुणा, आनंदोत्सव है तो उल्लास, उपकार है तो कृतज्ञता, महत्त्व है तो दीनता तुलसीदास के हृदय में बिंब-प्रतिबिंब भाव से विद्यमान हैं।

मानव-जीवन के सर्वांगीण चित्र के साथ मर्यादा का अपरिमित प्रतिष्ठापन में भी 'मानस' बेजोड़ है। इसके अंतर्गत वर्णन, चरित्रांकन, संस्कृति-निरूपण, रस-योजना, भावचित्रण या पारस्परिक व्यवहार आदि से संबंधित सभी बातों में मर्यादा का कुशल निर्वाह मिलता है। इसी प्रकार, बहुविध समन्वय की जैसी प्रशस्त भावना यहाँ विद्यमान है, वैसी शायद ही कहीं दिखाई पड़े। सच्चे मानस-सेवी और प्रेमी को सगुण-निर्गुण के प्रति अभेद्य दृष्टि प्राप्त होती है; उसे कर्म, ज्ञान और भक्ति सभी में एक-दूसरे के सहायक प्रतीत होते हैं। वह जीवन-मुक्ति और विदेह-मुक्ति का मर्म समझा जाता है। शैव, शाक्त, वैष्णव या किसी अन्य सम्प्रदाय-विशेष के प्रति उसकी आस्था बनी रहती है और सबमें परम तत्त्व की एकता देखता है। किसी से उसका विरोध नहीं है। वह वर्णाश्रम धर्म और मानवता का अनुयायी बना रहता है। व्यक्ति, परिवार और समाज सभी के उत्कर्ष का आकांक्षी होता है, पर विशेष महत्त्व लोकधर्म को देता है। वेद-शास्त्र और लोक व्यवहार में अवरोध दृष्टि रखता है। भोग और त्याग दोनों के औचित्य को समझता है। लोक व्यवस्था के बीच राम राज्य का दर्शन करना चाहता है। इन सभी विचारों की उपलब्धि को 'मानस' में समाविष्ट व्यापक, समन्वय की प्रेरणा का सुभग फल ही समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त 'मानस' में समन्वय की और भी अनेक दिशाएँ हैं, जिनमें काव्य के भाव-पक्ष तथा कला-पक्ष का समन्वय, काव्य के प्रतिमानों का समन्वय, स्वानुभूति और बाह्यार्थ का समन्वय, काव्य और अध्यात्म का समन्वय तथा संस्कृतियों का समन्वय विशेष उल्लेखनीय है।

तुलसीदास जी में कवि की कारयित्री प्रतिभा, भक्त के निष्काम हृदय और समाज सुधारक की लोक-मंगल की भावना का अपूर्व समन्वय निर्विवाद है। उन्होंने अपने पृथुल अनुभव, सूक्ष्म अन्वेषण और गंभीर शास्त्रज्ञान के सहारे दिव्य-शक्ति की प्रेरणा से कवित्व धर्म और भक्ति की त्रिवेणी 'मानस' के रूप में प्रवाहित करके अपने समन्वय साधना की रश्मियों से समाज के अंधकार को दूर किया। भारत आधुनिकता के वशीकरण से विमोहित हो सकता है, पर भारतीय 'मानस' के रहते स्वप्न में भी धूमिल नहीं होगी। सौंदर्य, उदात्त चेतना और नैतिकता को जागरित करने वाला मानस से बढ़कर दूसरा कोई अन्य महाकाव्य नहीं मिलेगा। 'रामचरितमानस' संपूर्ण भारतीय जनमानस की नानाविध प्रवृत्तियों को रेखांकित करने वाला एक ऐसा महाकाव्य है जिसकी प्रासंगिकता सभी कालों में विद्यमान रहेगी।

(ii) मेरा प्रिय खेल

सबकी अपनी-अपनी रुचि होती है। किसी को सिनेमा या नाटक का शौक होता है तो किसी को कुश्ती का। इस प्रकार, कोई क्रिकेट खेलना चाहता है तो कोई हॉकी या टेनिस का दीवाना है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे जो खेल पसंद है वह है फुटबॉल का खेल।

यों तो खेल बहुत है लेकिन फुटबॉल का खेल अलबेला है। क्रिकेट की लीजिए, बल्ला चाहिए, बॉल चाहिए, विकेट चाहिए। इसे छोड़िए, टेनिस पर आएँ तो रैकेट चाहिए, कीमती बॉल चाहिए, पक्की जमीन चाहिए। हॉकी की भी यही दशा है। स्टिक

और गेंद की कीमत क्या आम आदमी अदा कर सकता है ? कभी नहीं। वस्तुत: ये आम आदमी के वश के खेल नहीं है। फुटबॉल तो आदमी का खेल है। बस, एक गेंद ली और शुरू हो गए। साथी मिल गए तो ठीक, नहीं अकेले भी दौड़ लगा लीजिए। मैदान के लिए भी ज्यादा झंझट नहीं।

श्रेष्ठ खेल की कसौटी है कम-से-कम खर्च और कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक आनंद और स्फूर्ति की प्राप्ति। इस दृष्टिकोण से मेरा खेल फुटबॉल श्रेष्ठ है। क्रिकेट के लिए पाँच दिन या कम-से-कम पूरा दिन, टेनिस के लिए तीन-चार घंटे, बैडमिंटन के लिए भी लगभग इतना ही समय चाहिए लेकिन फुटबॉल के लिए सिर्फ नब्बे मिनट ही पर्याप्त है और आनंद ऐसा कि उधर मैदान में गेंद उछलती है। इधर दिल उछलने लगते हैं। खेलने वालों को नहीं, देखने वालों को आखिरी सीटी बजने के पहले और कुछ सोचने-समझने का समय नहीं। सच कहिए तो फुटबॉल की इसी विशेषता के कारण यह खेल आज दुनिया में सबसे अधिक लोकप्रिय है। ब्राजील, अर्जेंटीना, इटली, फ्रांस आदि में तो इसकी दीवानगी हद से बाहर की है। दूसरा कोई खेल आम आदमी को समझ में आए न आए, फुटबॉल का खेल सबकी समझ में आता है।

फुटबॉल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बहुत ज्यादा खतरा नहीं है। क्रिकेट की गेंद उछलकर नाक या सिर पर लग जाए तो समझ लीजिए कि गए काम से। यही बात हॉकी के साथ भी लागू है। स्टिक अगर गेंद पर न लगकर किसी अंग पर लग जाए तो चलिए अस्पताल। लेकिन फुटबॉल के साथ ऐसी कोई बात नहीं। किसी ने लंगड़ी मार भी दी, तो कोई बात नहीं, गिरे और उठकर फिर दौड़ लगा दी, गेंद के पीछे। ज्यादा-से-ज्यादा हुआ तो मोच ही तो आयी। क्या हुआ, लम्हों में ठीक हो गए। यही कारण है कि मुझे फुटबॉल का खेल सबसे ज्यादा प्रिय है–खर्च कम और आनन्द भरपूर।

(iii) भ्रष्टाचार

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार। आज शासन और समाज पर इतना हावी हो गया है कि इससे मुक्ति पाना असम्भव प्रतीत हो रहा है। स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार का बोलबाला निरन्तर बढ़ता गया और हमारे शासन और समाज में यह रोग इतना व्यापक हो गया है कि इसका इलाज निकट भविष्य में संभव नहीं दिखता। स्वतंत्रता के पहले भ्रष्टाचार मात्र समाज में और वह भी संकुचित सीमा से व्याप्त था, किन्तु स्वतंत्रता के बाद प्रशासन तंत्र में इसकी इतनी वृद्धि हो गयी कि पूरा प्रशासनिक ढाँचा भ्रष्टाचार पर स्थिर हो गया। आये दिन समाचारपत्रों में भ्रष्टाचार संबंधी खबरें भरी रहती हैं। अमुक नेता पर भ्रष्टाचार का गम्भीर अभियोग, अमुक मंत्री के भ्रष्टाचार का भंडाफोड़, शासकीय दल के नेता ने भ्रष्टाचार का परिचय दिया आदि। विधान-सभाओं और लोकसभा में भी विरोधी दल के सदस्य शासकों के भ्रष्टाचार की गुहार मचाते हैं। अप्रकट रूप में भ्रष्टाचार इतना स्पष्ट और व्यापक हो गया है कि शासन वर्ग भी इससे इनकार नहीं कर सकता। एक बार बिहार के मुख्यमंत्री को भी कहना पड़ा था कि भ्रष्टाचार हमारा राष्ट्रीय अंग बन गया है।

अब शासक वर्ग भ्रष्टाचार में बुरी तरह लिप्त हैं। मंत्रीगण घूस या चन्दा लिये बिना काम नहीं करते। अपने भाई-भतीजे को ठेका देते हैं, उन्हें ऊँचे-ऊँचे ओहदे देकर लाभान्वित करते हैं, ठेकेदार से मोटी रकम ऐंठते हैं। जब शासक वर्ग का यह हाल है तो ऑफिसर वर्ग का क्या कहना, जिसे नैतिकता और आदर्श से कुछ लेना-देना नहीं है। वे मनमानी करने, घूस बटोरने के लिए पहले ही बदनाम हैं; अत: भ्रष्टाचार की बहती गंगा में हाथ धोने से वे बाज क्यों आएँ। जब उनका बॉस ही भ्रष्टाचार में बुरी तरह लिप्त है तो उन्हें तो भ्रष्टाचार करने या फैलाने में पूरी सुविधा प्राप्त है।

एक चपरासी की बहाली के लिए मोटी रकम माँगने और लेने में उसे भय क्यों लगे। नौकरी लेनी है तो घूस दो, सप्लाई करनी है तो घूस दो। बल्कि घूस की जगह अब कमीशन चला है, परसेंटेज (प्रतिशत) 20%, 25%, 30%। ठेका लेने के लिए पहले ठेकेदार को तय कर देना पड़ता है कि साहब का इतना प्रतिशत और ऑफिस का इतना प्रतिशत। किसी सरकारी विभाग में किसी चीज की सप्लाई का ऑर्डर या रुपये का एलॉटमेण्ट तभी कराया जाता है जब सप्लायर यानी आपूर्तिकर्त्ता परसेंटेज देना तय कर देता है। पहले चाय-पान के नाम पर किरानी को खुश कर दिया जाता था, किन्तु अब स्पष्टत: परसेंटेज तय किया जाता है और दुगुनी-तिगुनी दाम बढ़ाकर सप्लाई की जाती है। पहले डर-डरकर भ्रष्टाचार किया जाता था। भ्रष्टाचारी ऑफिसर किरानी या मंत्री ऊँगली पर इने-गिने होते थे, किन्तु अब ईमानदार किरानी, ऑफिसर और मंत्री दीपक से ढूँढने पर मुश्किल से मिलते हैं। जो ईमानदार हैं भी यदि वे भ्रष्टाचार में शामिल नहीं होते तो उनकी बंदी कर दी जाती है, उन्हें सस्पेंड कर दिया जाता है अथवा उनके कार्यक्रम को ठीक से कार्यान्वित नहीं किया जाता है।

शासन में तो पूरी तरह भ्रष्टाचार व्याप्त आये दिन छूरेबाजी, लूट, राहजनी, बलात्कार आदि की घटनाएँ होती हैं। खाद्य पदार्थों में सेठ-व्यापारियों द्वारा तेजी से मिलावट की जा रही है, मगर देखने वाला कोई नहीं है। सेक्स स्कैण्डल का कहना क्या–वेश्यावृत्ति, शराबखोरी, जुआबाजी, जमीन-हड़प, पत्नी-हड़प आदि खबरों से समाचार-पत्र भरा रहता है।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन आज सम्भव नहीं दीखता है। जबतक शासनतंत्र से भ्रष्टाचार का उन्मूलन नहीं होगा तबतक मँत्रियों का चरित्र निर्मल नहीं होगा, जबतक नेताओं में राष्ट्रीयता नहीं होगा, तबतक चरित्र का निर्माण न होगा तबतक न तो शासन से ही भ्रष्टाचार जायेगा और न समाज से ही। जितने बड़े गुण्डे, चोर, भ्रष्टाचारी, अनपढ़ तथा असामाजिक तत्त्व हैं, वे सब अब चुनाव में खड़े होकर मंत्री बनने के लिए प्रयास करते हैं और उन्हें सफलता भी मिलती है। इस प्रकार शासनतंत्र पर ऐसे अवांछित वर्ग का प्रभुत्व हो गया है और निकट भविष्य में राष्ट्रीय चरित्र का एक भी व्यक्ति शासक रूप में नजर नहीं आएगा। अत: भ्रष्टाचार के सहयोग का उन्मूलन असंभव है। जबतक हमारे देश में कोई क्रांतिकारी सरकार सत्ता में स्थापित नहीं होती है तबतक भ्रष्टाचार का किसी के लिए रोकना लोहे के चने चबाना है। अभी तो सभी चोर-चोर मौसेरे भाई बने हुए हैं। भ्रष्टाचारियों के मिली भगत से शासन और समाज का संचालन हो रहा है। बिल्ली के हाथ में दही का मटका है। फिर शिकायत किससे ? आवश्यकता है कि हम वैयक्तिक जीवन में अधिक-से-अधिक नैतिक बनें।

(iv) छठ पर्व

बिहार के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह शुभ पर्व हिन्दू कैलेंडर के अनुसार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की छठी को मनाया जाता है। बिहार में छठ का त्योहार सूर्य उपासना के लिए सबसे पवित्र पर्व माना गया हैं। यह पर्व हर साल दो बार आता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कर्तिक में। इस पर्व को डाला छठ के नाम से भी जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि सच्चे मन से की गई पूजा से सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। यह पर्व पति की लम्बी आयु और संतान प्राप्ति के लिए मनाया जाता है। छठ पूजा व्रत बड़ी ही निष्ठा से रखा जाता है। यह पर्व चार दिनों तक किया जाता है। इस व्रत के पहले दिन महिलाएँ सेंधा नमक, कद्दू की सब्जी, चने की दाल और रोटी के साथ भोजन करती है। इसके अगले दिन व्रत शुरू होता है। महिलाएँ अन्न जल को त्याग कर दिन भर व्रत रखती है। और शाम को गन्ने के रस या गुड़ में बने हुए चावल की खीर को प्रसाद के रूप में लेना होता है। तीसरे दिन सूर्य षष्ठी वाले दिन व्रत रखकर शाम के वक्त, डूबते हुए सूरज को अर्घ्य देने के लिए पूजा की सामग्री को बाँस के डलिया में रखकर घाट पर ले जाया जाता है। सूर्य को अर्घ्य करने के पश्चात् सारी सामग्री घर में रख देनी चाहिए और रात के समय छठी माता की व्रत कथा सुननी चाहिए। चौथे दिन सुबह सूर्य निकलने से पहले घाट पर पहुँच जाना चाहिए। घाट से लौटने के बाद प्रसाद को सभी के बीच बाँटना चाहिए और स्वयं प्रसाद खाकर व्रत खोलना चाहिए। एक मान्यता के अनुसार छठ पूजा का पर्व महाभारतकाल में कुंती द्वारा सूर्य देव की आराधना एवं पौत्र कर्ण के जन्म से माना जाता है। एक और कथा के मुताबिक जब लंका विजय पश्चात् राम राज्य की स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को प्रभू राम और सीता ने व्रत रखा था और सूर्य देव की अराधना की थी।

(v) मोबाइल और विद्यार्थी जीवन

आज मोबाइल फोन सभी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालों के कारण मोबाईल फोन काफी प्रचलित हो चुका है। समाज का हर वर्ग अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय-हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। आज विद्यार्थी मोबाइल पर इंटरनेट की मदद से कहीं भी बैठे वांछित सामग्री को डाउनलोड करके और उसका प्रिंट लेकर अपनी पढ़ाई को गति प्रदान

कर रहा है। इसके अतिरिक्त देश-विदेश के विभिन्न कॉलेजों में प्रवेश, प्रतियोगिताओं, परीक्षा परिणामों, नौकरी आदि से संबंधित भरपूर जानकारी वह इसी से एकत्रित करता है किन्तु विद्यार्थियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो इसका दुरूपयोग करता है। ऐसे विद्यार्थी आपस में घंटों बेकार में गप्पे हाँकने, जरूरत से ज्यादा मैसेज भेजने, वीडियो गेम्स खेलने, चित्र खींचने और नये-नये मोबाइल खरीदने और उनकी ही बातें करते रहने में अपना समय बर्बाद करते हैं। अत: ऐसे विद्यार्थियों को इसकी उपादेयता समझनी चाहिए और इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

(vi) दहेज उन्मूलन

आज दहेज की प्रथा को देश भर में बुरा माना जाता है। इसके कारण कई दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, कितने ही घर बर्बाद हो जाते हैं। आत्महत्याएँ भी होती देखी गई हैं। नित्य-प्रति तेल डालकर बहुओं द्वारा अपने-आपको आग लगाने की घटनाएँ भी समाचार-पत्रों में पढ़ी जाती है। पति एवं सास-ससुर भी बहुओं को जला देते या हत्याएँ कर देते हैं। इसलिए दहेज प्रथा को आज कुरीति माना जाने लगा है। भारतीय सामाजिक जीवन में अनेक अच्छे गुण हैं, परन्तु कतिय बुरी रीतियाँ भी उसमें घुन की भाँति लगी हुई हैं। इनमें एक रीति दहेज प्रथा की भी है। विवाह के साथ ही पुत्री को दिए जाने वाले सामन को दहेज कहते हैं। इस दहेज में आभूषण, कार, वाशिंग मशीन, फ्रीज, ए॰ सी॰, स्मार्ट टी॰ वी॰ आदि की बात ही क्या है, हजारों रुपया नकद भी दिया जाता है। इस दहेज को पुत्री की स्वस्थ शरीर, सौन्दर्य और सुशीलता के साथ ही जीवन को सुविधा देने वाला माना जाता है। दहेज प्रथा का उल्लेख मनु स्मृति में ही प्राप्त हो जाता है, जबकि वस्त्राभूषण युक्त कन्या के विवाह की चर्चा की गई है। गौएँ तथा अन्य वाहन आदि देने का उल्लेख मनुस्मृति में किया गया है। समाज में जीवनोपयोगी सामग्री देने का वर्ण भी यह कि माता-पिता अपनी कन्या को दान देते समय यह सोचते थे कि वस्त्रादि सहित कन्या को कुछ समान दे देने से उसका जीवन सुविधापूर्वक चलता रहेगा और कन्या को भाईयों के समान भागीदार है, चाहे वह अचल सम्पत्ति नहीं लेती थी परन्तु विवाह के काल में उसे यथाशक्ति धन, पदार्थ आदि दिया जाता था, ताकि वह सुविधा से जीवन व्यतीत करके और इसके पश्चात् भी उसे जीवन भर सामान मिलता रहता था। घर भर में उसका सम्मान हमेशा बना रहता था। पुत्री जब भी पिता के घर आती थी, उसे अवश्य ही वस्त्रादि दिया जाता था। इस प्रथा के दुष्परिणामों से भारत के मध्ययुगीन इतिहास अनेक घटनाएँ भरी पड़ी थी। धनी और निर्धन व्यक्तियों को दहेज देने और न देने की स्थिति में दोनों में कष्ट सहने पड़ते हैं। धनियों से दहेज न दे सकने से दु:ख भोगना पड़ रहा है। समय के चक्र में इस सामाजिक उपयोगिता की प्रथा ने धीरे-धीरे अपना बुरा रूप धारण करना आरंभ कर दिया और लोगों ने अपनी कन्याओं का विवाह करने के लिए भरपूर धन दने की प्रथा चला दी। इस प्रथा को खराब करने का आरंभ धनी वर्ग से ही हुआ है क्योंकि धनियों को धन की चिन्ता नहीं होती। वे अपनी लड़कियों के लिए लड़का खरीदने की शक्ति रखते हैं। इसलिए दहेज-प्रथा ने जघन्य बुरा रूप धारण कर लिया और समाज में यह कुरीति-सी बन गई है। अब इसका निवारण दुष्कर हो रहा है। नौकरी-पेशा या निर्धनों को इस प्रथा से अधिक कष्ट पहुँचता है। अब तो बहुधा लड़के को बैंक का एक चैक मान लिया जाता है कि जब लड़की वाले आयें तो उनकी खाल खींचकर पैसा इकट्ठा कर लिया जाए ताकि लड़की का विवाह कर देने के साथ ही उसका पिता बेचारा कर्ज से दब जाये।

दहेज प्रथा को सर्वथा बंद नहीं किया जाना चाहिए परन्तु कानून बनाकर एक निश्चित मात्रा तक दहेज देना चाहिए। अब तो पुत्री को पुत्र का पिता की सम्पति में समान भाग स्वीकार किया गया है। इसलिए भी दहेज को कानूनी रूप दिया जाना चाहिए और लड़कों को माता-पिता द्वारा मनमानी धन दहेज में लेने पर प्रतिबंध लग जाना चाहिए। जो लोग दहेज में मनमानी करें उन्हें दण्ड देकर इस दिशा में सुधार करना चाहिए। दहेज प्रथा को भारतीय समाज के माथे पर कलंक के रूप में नहीं रहने देना चाहिए।

2. (i) प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ आधुनिक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता सुविख्यात निबंधकार बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'बातचीत' शीर्षक ललित निबंध से उद्धृत हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। बातचीत के दरम्यान ही मनुष्य अपने दिल की बात को एक-दूसरे के समक्ष प्रकट करता है। वास्तव में, जबतक मनुष्य बोलता नहीं है तबतक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता। बातचीत के द्वारा ही दो व्यक्तियों से लेकर मीटिंग या सभा तक की भावना और चाहत को समझा जाता है। एक तरह से देखा जाए तो बातचीत वह केन्द्र बिन्दु है, जिसके द्वारा मनुष्य के अन्दर छिपे हुए गुण-दोष को सहज ही समझा जा सकता है। हमारी वाणी कैंची के समान सदा उन्मुक्त होकर भावनाओं का सफर तय करती है। यदि जिह्वा को काबू में नहीं किया गया तो क्रोधाग्नि में सर्वस्व नष्ट हो सकता है। अत: स्पष्ट है कि मौन रहने से व्यक्तित्व का पता लगाना आसान नहीं होता है।

(ii) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत, भाग-2 के 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी से उद्धृत हैं। इसके कहानीकार (लेखक) पं॰ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में मानव जीवन की प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अत्यन्त सफलतापूर्वक किया गया है। विद्वान लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि मृत्यु के कुछ समय पूर्व मानव की स्मरण-शक्ति अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है। उसे अपने विगत जीवन की समस्त घटनाओं की स्मृति सहज हो जाती है। अतीत के चित्र उसके नेत्र के सामने चलचित्र की भाँति नाचने लगते हैं। उस पर जमी हुई समय की धुन्ध हट जाती है तथा वह उन्हें सहज ढंग से देख एवं अनुभव कर सकता है। गुलेरी ने उक्त तथ्य इस संदर्भ में प्रस्तुत किए हैं, लहना सिंह युद्ध क्षेत्र में गोलीबारी से घायल होकर चिन्तनीय स्थिति में लेटा हुआ है। उस समय अपने बीते दिनों की स्मृतियाँ उसके मानस-पटल को झकझोरने लगती है। वह उद्विग्न हो उठता है तथा पास में बैठे बजीरा सिंह को सारी बातें कहना प्रारम्भ करता है। विद्वान लेखक श्री गुलेरी ने उक्त बातें इसी संदर्भ में वर्णित की है।

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों में मृत्यु के समय में मानव-मन की स्वाभाविक प्रक्रिया का वर्णन है। कथन के अनुसार जमादार लहना सिंह मृत्यु-शैय्या पर अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा है, उस समय उसे विगत की सम्पूर्ण बातें याद आने लगती है जो इतना स्पष्ट है कि इससे पहले उसे कभी ऐसी अनुभूति नहीं हुई थी। अत: लेखक की यह मनोवैज्ञानिक सोच है कि मृत्यु निकट आने पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के अतीत के क्षण साकार एवं स्पष्ट परिलक्षित हो जाते हैं।

(iii) प्रस्तुत पंक्ति सूरदास द्वारा रचित पद से ली गई है। प्रस्तुत पंक्ति कवि सूरदास कृष्ण के बचपन में भोजन करने की प्रक्रिया का बखान किया है।

श्याम (कृष्ण) नंद की गोद में बैठे भोजन कर रहे हैं। वे कुछ खाते हैं, कुछ भूमि पर गिराते हैं। इस छवि को नंदरानी देख रही है। कृष्ण को दही से विशेष रुचि है। मिश्री, दही और माखन को मिलाकर कृष्ण मुख में डालते हैं। वे आप भी खाते हैं और नंद के मुख में भी डालते हैं। इस छवि का वर्णन कवि को करते नहीं बनता। इस प्रकार जो आनंद नंद और यशोदा पा रहे हैं वह तीनों लोकों में नहीं हैं।

(iv) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक दिगन्त भाग-II के तुलसीदास के 'पद' शीर्षक पाठ से ली गयी है। इन पंक्तियों में कवि कलियुग की इस महामारी से दुखी है। चारों तरफ उसे भयंकर दु:ख का संसार दिखाई पड़ रहा है। इसलिए वह कहता है कि इस भयंकर कलियुग में उत्तम साधनरूपी उद्यम-सा बड़ा ही दारुण दुर्भिक्ष पड़ गया है जितने उद्यम और उपाय-साधन हैं, सभी बुरे हैं। कवि का यह तत्कालीन समय है। कोई भी कार्य निर्विघ्न पूरा नहीं होता, इसी से आपसे भीख माँगना ही मैंने उचित समझा है। कलियुगी मनुष्यों की करतूत तो नीच है। दिन-रात विषयों के लिए ही पाप में लिप्त रहते हैं और उनका मन ऊँचा है, चाहते हैं सच्चा सुख मिले परन्तु सच्चा मोक्षरूप सुख बिना भगवत्कृपा हुए मिलता नहीं। जैसे कोढ़ की खाज जिसे खुजलाते समय सुख मिलता है पर पीछे मवाद निकलने पर जलन पैदा होती है उसी के समान इन्द्रियों के साथ विषय का संयोग होने पर आरम्भ में तो सुख मिलता है परन्तु परिणाम में महादु:ख होता है। इस प्रकार कवि कलिकाल के प्रभाव से बहुत दु:खी है वह अपने तत्कालीन समय का वर्णन ऐसे करता है–

खेती न किसान को भिखारी को भीख भली।

3. सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पटना

विषय : राजगीर में घूमने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं राजगीर (बिहार) घूमना चाहता हूँ। यह बड़ा ही रमणीय पर्यटन स्थल है। यहाँ गर्म कुंड में सल्फरयुक्त पानी गिरता है। जाड़े में स्नान करने में बड़ा ही मजा आता है। रज्जू मार्ग से कुर्सियों पर बैठकर आसमान में जाने में बड़ा आनंद आता है। पहाड़ के ऊपर बुद्ध भगवान की स्वर्णिम मूर्तियाँ हैं। पूजा-पाठ भी चलता रहता है। बुद्ध ने जीवन में मध्यम मार्ग से चलने की प्रेरणा दी थी।

अत: आपसे अनुरोध है कि मुझे राजगीर घूमने की अनुमति दी जाय। इसके लिए सदा मैं आपका आभारी बना रहूँगा।

आपका विश्वासी छात्र
रमेश कुमार

अथवा

सेवा में,

वार्ड आयुक्त,
आजाद नगर, पटना।

विषय : सड़क की जर्जर स्थिति के बारे में।

महोदय,

मैं आजाद नगर का निवासी हूँ और हमारे नगर में चारों ओर सड़कों की शोचनीय दुर्दशा हो गई है। हर जगह सिर्फ टूटी-फूटी सड़कें ही दिखाई पड़ती है। इस वजह से काफी चिंता हो रही है।

मैं वार्ड आयुक्त का ध्यान वार्ड की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि हमारे वार्ड की सड़कों की दुर्दशा पर जल्द-से-जल्द कार्य किया जाय।

धन्यवाद !

दिनांक : 15.01.2023

भवदीय
अरविन्द कुमार
आजाद नगर, पटना।

4. (i) हममें वाक्शक्ति न होती तो मनुष्य गूँगा होता, वह मूकबधिर होता। मनुष्य को सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करता है और उसकी यही अभिव्यक्ति वाक्शक्ति भाषा कहलाती है। व्यक्ति समाज में रहता है। इसलिए अन्य व्यक्ति के साथ उसका पारस्परिक सम्बन्ध और कुछ जरूरतें होती हैं जिसके कारण वह वार्तालाप करता है। यह ईश्वर द्वारा दी हुई मनुष्य की अनमोल कृति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह मनुष्य है। यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो मनुष्य जानवरों की भाँति ही होता। वह अपनी क्रियाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। जो हम सुख-दुख इंद्रियों के कारण अनुभव करते हैं वह अवाक रहने के कारण नहीं कह पाते।

(ii) 'उसने कहा था' प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानी है। गुलेरीजी ने लहनासिंह और सूबेदारनी के माध्यम से मानवीय संबंधों का नया रूप प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सूबेदारनी के अपने प्रति विश्वास से अभिभूत होता है, क्योंकि उस विश्वास की नींव में बचपन के संबंध है। सूबेदारनी का विश्वास ही लहनासिंह को उस महान त्याग की प्रेरणा देता है।

कहानी एक और स्तर पर अपने को व्यक्त करती है। प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर यह एक अर्थ में युद्ध-विरोधी कहानी भी है। क्योंकि लहनासिंह के बलिदान का उचित सम्मान किया जाना चाहिए था परन्तु उसका बलिदान व्यर्थ हो जाता है और लहनासिंह का करुण अंत युद्ध के विरुद्ध में खड़ा हो जाता है। लहनासिंह का कोई सपना पूरा नहीं होता।

(iii) भ्रष्टाचार की जड़ सरकार की गलत नीतियाँ हैं। इन गलत नीतियों के कारण भूख है, महँगाई है, भ्रष्टाचार हैं, कोई काम नहीं जनता का निकलता है बगैर रिश्वत दिए। सरकारी दफ्तरों में, बैंकों में, हर जगह, टिकट लेना है उसमें, जहाँ भी हो, रिश्वत के बगैर काम नहीं जनता का होता। हर प्रकार के अन्याय के नीचे जनता दब रही है। शिक्षा-संस्थाएँ भ्रष्ट हो रही है। हमारे नौजवानों का भविष्य अंधेरे में पड़ा हुआ है। जीवन उनका नष्ट हो रहा है इस प्रकार चारों ओर भ्रष्टाचार व्याप्त है। इसे दूर करने के लिए समाजवादी तरीके से सरकार ऐसी नीतियाँ बनाएँ जो लोककल्याणकारी हो।

(iv) **प्रवृत्तिमार्ग**–प्रवृत्तिमार्ग को गृहस्थ जीवन की स्वीकृति का मार्ग है। दिनकरजी के अनुसार गृहस्थ जीवन में नारियों की मर्यादा बढ़ती है। जो पुरुष गृहस्थ जीवन को अच्छा मानते हैं उन्हें प्रवृत्तिमार्गी माना जाता है। जो प्रवृत्तिमार्गी हुए उन्होंने नारियों को गले से लगाया। नारियों का सम्मान दिया। प्रवृत्तिमार्गी जीवन में आनन्द चाहते थे और नारी आनन्द की खान है। वह ममता की प्रतिमूर्ति है। वह दया, माया, सहिष्णुता की भंडार है।

निवृत्तिमार्ग–निवृत्तिमार्ग गृहस्थ जीवन को अस्वीकार करने वाला मार्ग है। गृहस्थ जीवन को अस्वीकार करना नारी को अस्वीकार करना है। निवृत्ति मार्ग से नारी की मान मर्यादा गिरती है। जो निवृत्तिमार्गी बने उन्होंने जीवन के साथ नारी को भी अलग ढकेल दिया क्योंकि वह उनके किसी काम की चीज नहीं थी। उनका विचार था कि नारी मोक्ष प्राप्ति में बाधक है। यही कारण था कि प्राचीन विश्व में जब वैयक्तिक मुक्ति की खोज मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी साधना मानी जाने लगी, तब झुंड में झुंड विवाहित लोग संन्यास लेने लगे और उनकी अभागिन पत्नियों के सिर पर जीवित वैधव्य का पहाड़ टूटने लगा। बुद्ध, महावीर, कबीर आदि संत महात्मा निवृत्तिमार्ग के समर्थक थे।

(v) कवयित्री असमय पुत्र की मृत्यु के कारण उसे आगे का सहारा नहीं दीखता है इसलिए वह अपने को असहाय और विवश कहती है। जब उसका पुत्र उसके साथ था तो वह उस खिलौने की भाँति उसी में खोयी रहती थी जिस प्रकार बच्चे माँ अपने बच्चों का तरह-तरह से ध्यान रखती है। कहीं उसे सर्दी न लग जाए। कहीं उसे लू न लग जाए। कभी उसे लोरियाँ गाकर सुनाती, कभी थपकी देकर इसमें माँ का मन लगा रहता था। परन्तु पुत्र के बिछुड़ने के साथ ही वह असहाय हो जाती है और केवल उसके वियोग में आँसू बहाने को विवश हो जाती है।

(vi) 'राख से लीपा हुआ चौका' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि प्रात:कालीन नभ पवित्र एवं निर्मल है। जिस प्रकार लीपने के तुरंत बाद गीले चौके में किसी को इसलिए नहीं चलने-फिरने दिया जाता कि उससे चौके में पैरों के निशान पड़ जायेंगे और वह पवित्र तथा निर्मल नहीं रह पाएगा, उसी प्रकार भोर के नभ में भी प्रात: की ओस के कारण गीलापन है और वह बिल्कुल पवित्र एवं निर्मल है।

(vii) कवि ने सितारे को जनता के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। ये सितारे देश के भविष्य का निर्धारण करते हैं। यदि इसके साथ जन-शोषक वर्ग छेड़छाड़ करता है तो यह भयानक रूप धारण करता है।

(viii) नदियों की वेगवती धारा में जिन्दगी की धारा के बहाव, कवि के अन्त:मन की वेदना को प्रतिबिम्बित करता है। कवि को उनके कल-कल करते प्रवाह में वेदना की अनुभूति होती है। गंगा, इरावती, नील, अमेजन नदियों की धारा मानव-मन की वेदना को प्रकट करती है, जो अपने मानवीय अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। जनता की पीड़ा तथा संघर्ष को जनता से जोड़ते हुए बहती हुई नदियों में वेदना के गीत कवि को सुनाई पड़ते हैं।

(ix) हरचरना 'अधिनायक' शीर्षक कविता में एक आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है। वह एक स्कूल जाने वाला बदहाल गरीब लड़का है। राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में राष्ट्रगान दुहराता है।

(x) बिटिया की समझ (जानकारी) में चिमटा, कलछुल, कढ़ाई, सड़सी, दरवाजे की साँकल (सिकरी), कब्जा, पेंच तथा सिटकिनी आदि में लोहा है। इसके अतिरिक्त सेफ्टी पिन, साइकिल तथा अरगनी के तार में भी वह लोहा पाती है।

5. (i) कहानी का प्रारम्भ अमृतसर नगर के चौक बाजार में एक आठ वर्षीय सिख बालिका तथा एक बारह वर्षीय सिख बालक के बीच छोटे से वार्तालाप से होता है। दोनों ही बालक-बालिका अपने-अपने मामा के यहाँ आए हुए थे। बालिका व बालक दोनों सामान खरीदने बाजार आए थे कि बालक मुस्कुराकर बालिका से पूछता है, "क्या तेरी कुड़माई (सगाई) हो गई ?" इस पर बालिका

कुछ आँखें चढ़ाकर "धत्" कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया। ये दोनों बालक-बालिका दूसरे-तीसरे दिन एक-दूसरे से कभी किसी दुकान पर कभी कहीं टकरा जाते और वही प्रश्न और वही उत्तर। एक दिन ऐसा हुआ कि बालक ने वही प्रश्न पूछा और बालिका ने उसका उत्तर लड़के की संभावना के विरुद्ध दिया और बोली-हाँ हो गई।' इस अप्रत्याशित उत्तर को सुनकर लड़का चौंक पड़ता है और पूछता है, कब ? जिसके प्रत्युत्तर में लड़की कहती है "कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।" और यह कह कर वह भाग जाती है। परन्तु लड़के के ऊपर मानों बज्रपात होता है और वह किसी को नाली में धकेलता है, किसी छाबड़ी वाले की छावड़ी गिरा देता है, किसी कुत्ते को पत्थर मारता है, किसी सब्जी वाले के ठेले में दूध उड़ेल देता है और किसी सामने आती हुई वैष्णवी से टक्कर मार देता है और गाली खाता है। कहानी का पहला भाग यहीं नाटकीय ढंग से समाप्त हो जाता है। इस बालक का नाम लहना सिंह और यही बालिका बाद में सूबेदारनी के रूप में हमारे सामने आती है।

इस घटना के पच्चीस वर्ष बाद कहानी का दूसरा भाग शुरू होता है। लहना सिंह युवा हो गया और जर्मनी की लड़ाई में लड़ने वाले सैनिकों में भर्ती हो गया और अब वह नम्बर 77 राइफल्स में जमादार है। एक बार वह सात दिन की छुट्टी लेकर अपनी जमीन के किसी मुकदमे की पैरवी करने घर आया था। वहीं उसे अपने रैजीमेंट के अफसर की चिट्ठी मिलती है कि फौज को लाम पर जाना है, फौरन चले आओ। इसी के साथ सेना के सूबेदार हजारा सिंह को भी चिट्ठी मिलती है कि उसे और उसके बेटे बोधासिंह दोनों को लाम (युद्ध) पर जाना है अतः साथ ही चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और वह लहनासिंह को चाहता भी बहुत था। लहनासिंह सूबेदार के घर पहुँच गया। जब तीनों चलने लगे तब अचानक सूबेदार लहनासिंह से कहता है कि उसकी पत्नी सूबेदारनी उसे जानती है और वह उसे बुला रही है। लहनासिंह को आश्चर्य होता है कि सेना के क्वार्टरों में तो वह कभी रहा नहीं। पर जब अन्दर मिलने जाता है तब सूबेदारनी उसे 'कुड़माई हो गई' वाला वाक्य दोहरा कर 25 वर्ष पहले की घटना का स्मरण दिलती है और कहती है कि जिस तरह उस समय उसने एक बार घोड़े की लातों से उसकी रक्षा की थी उसी प्रकार उसके पति और एकमात्र पुत्र की भी वह रक्षा करे। वह उसके आगे अपना आँचल पसार कर भिक्षा माँगती है। यह बात लहना सिंह के मर्म को छू जाती है।

युद्ध भूमि पर उसने सूबेदारनी के बेटे बोधा सिंह की अपने प्राणों की चिन्ता न करके जान बचाई। पर इस कोशिश में वह स्वयं घातक रूप से घायल हो गया। उसने अपने घाव पर बिना किसी के कहे कस कर पट्टी बाँध ली और इसी अवस्था में जर्मन सैनिकों का मुकाबला करता रहा। शत्रुपक्ष की पराजय के बाद उसने सूबेदारनी के पति सूबेदार हजारा सिंह और उसके पुत्र बोधासिंह को गाड़ी में सकुशल बैठा दिया और चलते हुए कहा "सुनिए तो सूबेदारनी होराँ को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होंने कहा था वह मैंने कर दिया.....।"

सूबेदार पूछता ही रह गया उसने क्या कहा था कि गाड़ी चल दी। बाद में उसने वजीरा से पानी माँगा और कमरबन्द खोलने को कहा क्योंकि वह खून से तर था। मृत्यु सन्निकट होने पर जीवन की सारी घटनाएँ चल-चित्र के समान घूम गईं और अंतिम वाक्य जो उसके मुँह से निकला वह था "उसने कहा था।" इसके बाद अखबारों में छपा कि "फ्रांस और बेल्जियम-68 सूची-मैदान में घावों से भरा नं० 77 सिक्ख राइफल्स जमादार लहना सिंह।" इस प्रकार अपनी बचपन की छोटी-सी मुलाकात में हुए परिचय के कारण उसके मन में सूबेदारनी के प्रति जो प्रेम उदित हुआ था उसके कारण ही उसने सूबेदारनी के द्वारा कहे गये वाक्यों को स्मरण रख उसके पति व पुत्र की रक्षा करने में अपनी जान दे दी क्योंकि यह उसने कहा था।

(ii) "जूठन" शीर्षक पाठ के लेखक ओम प्रकाश वाल्मीकि जी हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि जब बालक थे उनके स्कूल में हेडमास्टर कलीराम उनसे पढ़ने के बदले झाड़ू दिलवाते हैं। नाम इस तरह से हेडमास्टर पूछता था जैसे कि कोई बाघ गरज रहा हो। सारा दिन उनसे झाड़ू दिलवाता है। दो दिन तक दिलवाने के बाद तीसरे दिन उसके पिता देख लेते हैं। लड़का फफक कर रो उठता है और पिता से सारी बात बताते हैं। पिताजी मास्टर पर गुस्साते हैं।

ओमप्रकाश बताते हैं कि उनकी माँ मेहनत-मजदूरी के साथ आठ-दस तगाओं के घर में साफ-सफाई करती थी। और माँ के इस काम में उनकी बड़ी भाभी तथा जसवीर और जेनेसर दोनों भाई माँ का हाथ बँटाते थे। बड़ा भाई सुखवीर तगाओं के यहाँ वार्षिक नौकर की तरह काम करता था। इन सब कामों के बदले मिलता था दो जानवर, पीछे फसल के समय पाँच सेर अनाज और दोपहर के समय एक बची-खुची रोटी जो रोटी खासतौर पर चूहड़ों को देने के लिए आटे-भूसी मिलाकर बनाई जाती थी। कभी-कभी जूठन, भी भंगन की टोकरी में डाल दी जाती थी। दिन-रात-मर-खप कर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र जूठन फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं, कोई शर्मिंदगी नहीं, कोई पश्चाताप नहीं। यह कितना क्रूर समाज है जिसमें श्रम का मोल नहीं बल्कि निर्धनता को बरकरार रखने का एक षड्यंत्र ही था सब।

ओमप्रकाश के घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि एक-एक पैसे के लिए प्रत्येक परिवार के सदस्य को खटना पड़ता था। यहाँ तक कि लेखक को भी मरे हुए पशुओं के खाल उतारने जाना पड़ता था। यह समाज की वर्ण-व्यवस्था एवं मनुष्य के द्वारा मनुष्य का किया गया शोषण का ही परिणाम है कि एक ओर व्यक्ति के पास धन की कोई कमी नहीं तो दूसरी ओर हजारों-हजार को दो जून की रोटी के लिए निकृष्ट कार्य करने पड़ते हैं। भोजन की कमी और मन की लालसा को पूरी करने के लिए जूठन भी चाटनी पड़ती है। लेखक को एक बात का बहुत गहरा असर होता है उसकी भाभी द्वारा कहा गया कथन कि "इनसे ये न कराओ..... भूखे रह लेंगे इन्हें इस गंदगी में न घसीटो।" ये शब्द लेखक को उस गंदगी से बाहर निकाल लाते हैं।

(iii) मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का अर्थ शिक्षा है। इसमें मनुष्य की साक्षरता बुद्धिमत्ता, जीवन-कौशल व अन्य सभी समाजोपयोगी गुण पाये जाते हैं। शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थी का विद्यालय जाना, विविध विषयों की पढ़ाई करना, परीक्षाएँ उत्तीर्ण होना, जीवन में ऊँचा स्थान प्राप्त करना, दूसरों से स्पर्धा करना, संघर्ष करना एवं जीवन के सर्व पहलुओं का समुचित अध्ययन करना—ये सारी चीजें शिक्षा के अन्तर्गत आती हैं। साथ ही जीवन को ही समझना शिक्षा है।

शिक्षा के कार्य—शिक्षा का कार्य केवल मात्र कुछ नौकरियों और व्यवसायों के योग्य बनाना ही नहीं है बल्कि संपूर्ण जीवन की प्रक्रिया बाल्यकाल से ही समझाने में सहयोग करना है एवं स्वतंत्रतापूर्ण परिवेश हेतु प्रेरित करना भी।

(iv) 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता के रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। वे छायावादी कवि हैं। यह कविता 'कामायनी' के 'निर्वेद' से ली गयी है। इड़ा की प्रजा और मनु के बीच युद्ध हुआ। सर्वत्र शांति छा गयी। सर्वत्र शोक छा गया। ऐसे में इड़ा ने श्रद्धा को आश्रय दिया। मुर्च्छित मनु को देख श्रद्धा द्रवित हो उठी। श्रद्धा और मनु का मधुर मिलन होता है। श्रद्धा भावनाओं के कोलाहल में शांति की दूतिनी है। श्रद्धा हृदय का प्रतीक है। इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। मनु मन का प्रतीक है। विचारों के उथल-पुथल में हृदय की बात श्रेष्ठ है।

मनुष्य व्याकुल होकर आराम खोजता है। पुरुष नारी की शरणस्थली खोजता है। नारी की गोद में पुरुष की चंचलता शांत हो जाती है। श्रद्धा मनु को विश्राम और चैन देती है। वह मलयानिल की हवा जैसी है। मन बड़ा चंचल है। वह थकता नहीं। हाँ, मन से जुड़ा शरीर थक जाता है।

श्रद्धा जीवन की घाटियों में जलयुक्त बरसात है। एक-एक बूँद पानी के लिए सभी तरसते हैं। दुनिया जेठ की प्रचंड दुपहरी है। श्रद्धा ठंडक देती है।

हमें हृदय की बात माननी चाहिए—'तुमुल कोलाहल कलह में मैं हृदय की बात रे मन'।

(v) 'कड़बक' मलिक मुहम्मद जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत्' के क्रमशः प्रारिम्भक और अन्तिम छंदों से लिए गए हैं।

प्रारंभिक स्तुति खंड से उद्धृत प्रथम कड़बक में कवि और काव्य की विशेषताएँ निरूपित करते हुए दोनों के बीच एक अद्वैत की व्यंजना की गई है। इसमें कवि एक विनम्र स्वाभिमान से अपनी रूपहीनता और एक आँख के अंधेपन को प्राकृतिक दृष्टांतों द्वारा महिमामंडित करते हुए रूप को गौण तथा गुणों को महत्वपूर्ण बताते हुए हमारा ध्यान आकर्षित किया है। कवि ने इस तथ्य को प्रस्तुत किया है कि उसके इन्हीं गुणों के कारण ही 'पद्मावत' जैसे मोहक काव्य की रचना संभव हो सकी।

द्वितीय कड़बक उपसंहार खंड से उद्धृत है, जिसमें कवि द्वारा अपने काव्य और उसकी कथा सृष्टि का वर्णन है। वे बताते हैं कि उन्होंने इसे गाढ़ी प्रीति के नयन जल में भिगोई हुई रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है इसी क्रम में वे

आगे कहते हैं कि अब न वह राजा रत्नसेन है और न वह रूपवती रानी पद्मावती है, न वह बुद्धिमान सुआ है और न राघवचेतन या अलाउद्दीन है। इनमें से किसी के न होने पर भी उनके यश के रूप में कहानी शेष रह गई है। फूल झड़कर नष्ट हो जाता है, पर उसकी खुशबू रह जाती है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि एक दिन उसके न रहने पर उसकी कीर्ति सुगन्ध की तरह पीछे रह जाएगी। इस कहानी का पाठक उसे दो शब्दों में याद करेगा। कवि का अपने कलेजे के खून से रचे इस काव्य के प्रति यह आत्मविश्वास अत्यन्त सार्थक और बहुमूल्य है।

(vi) नदियों की वेगवती धारा में जिन्दगी की धारा के बहाव, कवि के अन्त:मन की वेदना को प्रतिबिम्बित करता है। कवि को उनके कल-कल करते प्रवाह में वेदना की अनुभूति होती है। गंगा, इरावती, नील, अमेजन नदियों की धारा मानव-मन की वेदना को प्रकट करती है, जो अपने मानवीय अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। जनता की पीड़ा तथा संघर्ष को जनता से जोड़ते हुए बहती हुई नदियों में वेदना के गीत कवि को सुनाई पड़ते हैं।

6. (i) **शीर्षक : चरित्र-निर्माण**

चरित्र-निर्माण से मनुष्य जीवन में संघर्ष करना तथा सफल होना सिखता है। महात्मा गाँधी एक ऐसे ही जीते-जागते व्यक्तित्व का उदाहरण हैं, जिनसे कई चारित्रिक गुण सीख सकते हैं तथा सफलता अर्जित कर सकते हैं। वे सत्य वचन बोलने, बुरा नहीं सुनने तथा बुरा नहीं बोलने की आवश्यकता पर बल देते थे। छात्रों को इन गुणों को अपनाकर ही सफलता मिल सकती है।

(ii) **शीर्षक : युवा-मस्तिष्क**

युवा वर्ग नवीन बातों की ओर आकर्षित होता है। इस अवस्था में यदि सही शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिले तो विनाश की ओर ले जाती है। आज की शिक्षा पद्धति से एक संपूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य बनाना मुश्किल है।